50

श्रमम् विना न किमपि साध्यम्

हमारा
राष्ट्रीय श्रम दिवस

—दत्तोपन्त ठेंगड़ी

श्रमम् विना न किमपि साध्यम्

हमारा

राष्ट्रीय श्रम दिवस

लेखक

दत्तोपन्त ठेंगड़ी

महामन्त्री

भारतीय मजदूर संघ

प्रकाशक—

रामनरेश सिंह

प्रधानमंत्री, भारतीय मजदूर संघ, उत्तर प्रदेश

१४/१२, बम्बारोड, दर्शन पुरवा, कानपुर ।

मूल्य २५ नए पैसे

अनुक्रमणिका

१.	हमारा राष्ट्रीय श्रम दिवस	१
२.	मई दिवस क्यों नहीं	२
	(क) अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक एकता—एक कोरी कल्पना	२
	(ख) इन्साइक्लोपीडिया में उद्धृत-मई दिवस	४
	(ग) मई-दिबस के जन्मस्थान अमेरिका' का श्रम-दिवस	५
	(घ) मई दिवस—श्रमिक फूट का दिन	६
	(ङ) मई दिवस—जिससे कम्युनिस्ट प्रेरणा लेते हैं	७
	(च) मई दिवस—देशभक्ति के लिये चुनौती	८
	(छ) मई दिवस का अर्थ—वर्ग संघर्ष	९
३.	विश्वकर्मा जयन्ती	१२
४.	प्राचीन साहित्य में श्री विश्वकर्मा	१४
५.	विश्वकर्मा	२५
६.	आह्वान	२८

दो शब्द

श्रम के आदिदेव के रूप में भगवान विश्वकर्मा की पूजा यद्यपि सम्पूर्ण भारत में की जाती है परन्तु उनके समर्पित जीवन एवं पौरुषयुक्त कार्य की जानकारी कम ही लोगों को होगी। इस अज्ञान का मूल कारण है हमारे श्रमिक नेताओं का विदेशी सिद्धान्तों एवं कार्य पद्धति के प्रति अन्धानुकरण एवं भारतीयता की उपेक्षा।

भारतीय जीवनादर्शों के अनुकूल श्रमिक आन्दोलन को नई दिशा देने का प्रयास करने वाले 'भारतीय मजदूर संघ' ने इस दिशा में पग बढ़ाया और विश्वकर्मा दिवस को भारतीय श्रम-दिवस घोषित कर श्रमिकों से आग्रह किया कि वे इस दिवस को राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के रूप में मनायें। उसके आह्वान पर सम्पूर्ण देश के श्रमिकों ने इस दिवस को धूमधाम से मनाना प्रारम्भ भी किया है।

कुछ लोग विश्वकर्मा को एक व्यक्तिवाचक संज्ञा मानकर यह प्रश्न करते हैं कि एक ही शिल्पी अनेक युगों में कैसे विद्यमान रहा? इसके उत्तर में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि प्रारम्भ में यद्यपि विश्वकर्मा व्यक्ति-वाचक संज्ञा रही तथापि आगे चलकर उसने एक जाति या कर्म-वाचक संज्ञा का रूप धारण कर लिया। उनके मिशन को आगे बढ़ाने वाले आचार्य 'विश्वकर्मा' सम्बोधित होते रहे। अब भी अधिकांश भारतीय शिल्पी अपने नाम के आगे विश्वकर्मा लगाने में गौरव का अनुभव करते हैं।

जिसे आराध्यदेव मानकर हम पूजा-अर्चना करते हैं और कार्य के लिए प्रेरणा ग्रहण करते हैं, आवश्यक है कि उसके विषय में हमें समुचित ज्ञान भी हो। प्रस्तुत पुस्तिका इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये लिखी गई है। आशा है यह पुस्तिका पाठकों को भगवान विश्वकर्मा के विषय में समुचित जानकारी प्रदान कर उनके राष्ट्रार्पित जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर प्रदान कर सकेगा।

—प्रकाशक

★

हमारा राष्ट्रीय श्रम दिवस

स्वयं परमेश्वर ही इस संसार का पहला श्रमिक है, जिसने अपने श्रम से सृष्टि की रचना की है। उस आदि श्रमिक के नाते संसार में सब प्रकार की भौतिक प्रगति का दायित्व जिन्हें दिया गया था, उन श्रमिकों के जन्मदाता "विश्वकर्मा" की स्मृति में उनके जन्म दिवस को भारतीय मजदूर संघ ने "राष्ट्रीय श्रम दिवस" के रूप में मनाने का निश्चय किया है।

भारत में श्रम की प्रतिष्ठा सर्वदा मान्य रही है। भारतीय संस्कृति में कर्म यानी श्रम को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, यद्यपि 'लेबर' के रूप में किसी जाति या बर्ग का अस्तित्व नहीं था, किन्तु प्रत्येक नर, नारी से यह आशा की जाती थी कि वह निर्धारित कार्य आजीवन, पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति के साथ करता रहेगा। प्रत्येक व्यक्ति एक श्रमिक था और श्रम की प्रतिष्ठा के प्रतीक स्वरूप एक 'श्रम दिवस' भी मनाया जाता था। इस दिवस को 'विश्वकर्मा दिवस' कहते थे।

आज यह बड़े आश्चर्य एवं दुख की बात है कि वर्गविहीन संमाज की स्थापना करने वाले—"भारतीय", वर्ग संघर्ष के प्रतीक - स्वरूप "मई दिवस" को श्रम क्षेत्र में मान्यता दें।

★

मई दिवस क्यों नहीं ?

अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक एकता—एक कोरी कल्पना

बहुत से लोग सुनते चले आ रहे हैं कि मई दिवस अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस है और इसलिये श्रमिक एकता का दिन है। किन्तु वास्तविकता का ज्ञान होने पर सबको आश्चर्य लगेगा कि यह मई दिवस अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक एकता का प्रतीक नहीं अपितु श्रमिक फूट का प्रतीक है। वास्तव में श्रमिक जगत कभी भी एक नहीं रहा। आन्तरिक मतभेदों के कारण प्रथम इन्टर नेशनल को असफल होते देख स्वयं मार्क्स असहाय सा बैठा रहा। प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में ही जागरूक राष्ट्रीयता के दबाववश द्वितीय इन्टरनेशनल भी नष्ट-भ्रष्ट हो गया। इसके पश्चात् लेनिन ने तृतीय इन्टरनेशनल का संगठन किया! किन्तु, मौखिक रूप से भी संसार भर के मजदूरों के प्रतिनिधित्व का दावा करने सें पूर्व ही उसके प्रतिद्वन्दी रूप से द्वितीय इन्टरनेशनल पुनर्जीवित हो उठा। दो विश्वयुद्धों के मध्यकाल में ही श्रमिक क्षेत्र में त्रिकोणीय संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इस क्षेत्र में द्वितीय इंटरनेशनल के पुनर्गठन स्वरूप International Federation of Trade Unions, तृतीय इंटर नेशनल से प्रेरित Red International of Labour Unions तथा सिन्डिकेलिस्ट वर्ग द्वारा संगठित International Federation of the working peoples Association का प्रादुर्भाव

हुआ। प्रथम का केन्द्रीय सचिवालय एम्सटर्डम में था, द्वितीय का मास्को में एवं तृतीय का मैड्रिड में। इनके अतिरिक्त International Federation of Cristian Trade Unions and Pan American Federation of Labour जैसे अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी थे।

इस प्रकार श्रमिक एकता का आदर्श एक दूर का स्वप्न सिद्ध हुआ। संसार के श्रमिकों में आदर्शों एवं प्रवृत्तियों की भिन्नता के विद्यमानता के कारण ही इन विविध अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठनों का निर्माण हुआ। क्या संसार के विभिन्न देशों के मजदूर संसार की समस्त समस्याओं के प्रति समान दृष्टिकोण अपनावेंगे? क्या यह सम्भव है कि श्रमिक स्वभावतः जिस समाज का अंग है, उसके प्रति अपना सहज झुकाव, आसक्ति और भक्ति को अपने हृदय से निकाल फेकेगा? क्या किसी ऐसे श्रमिक की कल्पना की जा सकती है जो केवल आर्थिक मानव हो अथवा जिसके पास आत्मा, हृदय, मस्तिष्क न होकर केवल पेट हो? क्या उसकी श्रेष्ठ भावनाओं को जड़ मूल से निकाल कर उसके मनःप्रदेश पर पूर्ण रूप से सर्वसमर्थ डालर एवं रूबल का राज्य स्थापित किया जा सकता है? असम्भव है। अस्तु यह सोचना मिथ्या है कि मई दिवस उस बात में सफल होगा, जिसमें और सभी लोग असफल हो चुके हैं।

युद्ध पूर्व के काल में श्रमिक आन्दोलन पर 'शक्ति-राजनीति' का स्पष्ट प्रभाव पड़ रहा था। ऐग्लों-सेक्सनों और रूस के विभिन्न गठ-बंधनों के कारण यह प्रतीत होने लगा था कि कुछ समय के लिये राजनीतिक क्षेत्र में फासिस्ट-विरोध के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति हो चुकी है और इसके परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक एकता सर्वथा सम्भव हो गई है। इसके फलस्वरूप युद्ध-समाप्ति के तुरन्त बाद उभय शक्ति-गुटों के ट्रेडयूनियनों को लेकर The World

Federation of Trade Unions नामक संस्था संगठित की गई। किन्तु विवशतावश स्थापित राजनीतिक एकता कृत्रिम और अस्थायी सिद्ध हुई। शीघ्र ही इसके टूटने का क्रम प्रारम्भ हुआ। जिसके कारण W. F. T. U. में दरार पड़ गई। इसका परिणाम यह हुआ कि एंग्लो-सैक्सन गुट से प्रभावित International Confederation of Free Trade Unions का निर्माण हुआ। ये प्रतिद्वन्दी संगठन सदा एक दूसरे का विरोध करते हैं एवं अपने शक्ति गुट के साधन रूप में व्यवहृत होते हैं।

इन्साइक्लोपीडिया (ब्रिटेन) से उद्धृत—मई दिवस

पहली मई का दिन साधारण तौर से व्यवसायिक संघों, समाजवादी दलों व श्रमिक संगठनों द्वारा 'श्रम-दिवस' को सार्वजनिक रूप से मनाने के लिये चुना जाता है। यह दिन अमेरिका, कनाडा व इटली को छोड़कर (जहाँ इसके मनाने पर रोक है और दूसरा रोम का परम्परागत दिवस निश्चित किया गया है) लगभग सभी औद्योगिक देशों में जनसंख्या के एक भाग द्वारा मनाया जाता है। सोवियत रूस में यह एक सरकारी छुट्टी का दिन है।

'श्रम दिवस' और पुराने 'मई दिवस' उत्सवों के बीच सम्बन्ध जोड़ने का जो प्रयास कुछ समाजवादी लेखकों ने किया है—वह काल्पनिक है। राबर्ट ओवेन ने सन् १८३३ ई० में पहली मई को श्रमिकों का स्वर्ग (Millenium) आरम्भ होने का दिन निश्चित किया था और इसके बाद सन् १८८९ ई० में द्वितीय समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीय की प्रथम पेरिस कांग्रेस ने इस दिन को वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय समारोहों के लिये चुना था। प्रस्ताव के प्रस्तुत करने वालों की मूल इच्छा यह थी कि कामगर सीधी कार्रवाई द्वारा पहली मई को छुट्टी करवा लें, फिर वह सप्ताह का चाहे जो दिन हो। योरप के देशों में

इस प्रकार का प्रयास सदैव चलता रहा और अक्सर पुलिस के साथ खून खराबी पूर्ण संघर्ष भी होता रहा। ब्रिटेन में यह 'श्रम दिवस' समारोह आम तौर से 'मई दिवस' के बाद पड़ने वाले प्रथम रविवार को होता है और लन्दन का हाइड पार्क इसका परम्परागत सभा-स्थल है। ब्रिटेन में सन् १८९२ ई० तक प्रथम 'श्रम दिवस' उत्सव नहीं मनाया गया।

मई दिवस के जन्म-स्थान 'अमेरिका' का 'श्रम दिवस'

अमेरिका व कनाडा के प्रायः सभी राज्यों व क्षेत्रों में सितम्बर माह के प्रथम सोमवार को 'श्रम दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का आन्दोलन श्रमिक वीरों (Knights of Labour) द्वारा आरम्भ किया गया, जिन्होंने सन् १८८२-८३ और ८४ ई० में उस दिन न्यूयार्क शहर में परेडें की थीं। सन् १८८४ ई० में संगठन ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया कि सितम्बर के प्रथम सोमवार को 'श्रम दिवस' माना जाय और उसकी छुट्टी मान्य कराने के लिये भी पग उठाये गये। सभी संस्थाओं के श्रमिकों ने आन्दोलन में योग दिया। ओरिगन राज्य (Oregon) ने सबसे पहले २६ फरवरी, १८८७ ई० को उक्त दिवस को मान्यता देते हुये कानून पास किया और न्यूयार्क, न्यू-जेरसी व कलोरडो राज्यों ने तुरन्त उसका अनुसरण किया।

२८ जून, १८९४ ई० को कांग्रेस द्वारा यूनियन भर में उस दिन को वैधानिक छुट्टी बनाने का बिल पास किया गया। सिवाय कोलम्बिया जनपद व अन्य दूसरे राज्यों के संघीय श्रमिकों को छोड़कर उक्त कानून को लागू करने के लिये विभिन्न राज्यों द्वारा आगे भी कानून बनाने की आवश्यकता अनुभव की गई। (Wycoming) यकमिंग और फिलीपाईन्स के सिवाय सभी राज्यों व क्षेत्रों ने सन् १९२८ ई० में वैसा कानून बनाया। फिलीपाईन्स में श्रम दिवस पहली मई को मनाया

जाता है। कनाडा के ओनटेरियो, नोवास्कोटिया, न्यू-ब्रुसविक मनीटोबा, एलवर्टा, ससकचिवन (Saskatchewan) प्रान्त और यूकोन क्षेत्र में श्रम दिवस नियमित और वैधानिक रूप से मनाते हैं तथा अन्य प्रान्तों में यह गवर्नर की राजाज्ञा पर मनाया जा सकता है। अमेरिका में इसके मनाने का ढंग योरप से भिन्न है क्योंकि इसमें सभी वर्ग के लोग भाग लेते हैं। सभी कारखाने तथा स्टोर बन्द रहते हैं और सभा, पिकनिक, परेडों, भाषणों, खेल-कूद तथा अन्य अवकाश के कार्यक्रमों के रूप में यह मनाया जाता है।

मई दिवस—श्रमिक फूट का दिन

भारत के ट्रेड यूनियनिस्ट सामान्यतया इस तथ्य से अपरिचित ही हैं कि दो अन्तर्राष्ट्रीय चर्चों द्वारा 'मई दिवस' पर एकाधिकार करने का प्रयास हो रहा है। रूस के प्रयास को हम सब भलीभांति जानते ही हैं। रोमन कैथलिक चर्च ने भी ट्रेड यूनियन आन्दोलन के संगठनों का महत्व आंकने में कभी उपेक्षा नहीं की है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से श्रमिक आन्दोलन में प्रवेश कर लेने पर चर्च को स्वाभानिक रूप से मई दिवस के प्रति अपनी धारणा निश्चित करनी पड़ी। १ मई १९५५ को इटली के कैथोलिक श्रमिक संघ के समक्ष बारहवें पोप ने इस दिवस को श्रमिक सन्त जोसेफ का त्योहार निश्चित कर १ मई के दिवस का ईसाईकरण किया। उन्होंने घोषित किया कि 'यह १ मई का दिवस ईसाई श्रमिकों ने स्वीकार कर लिया है, अतः भविष्य में इस दिवस को द्वेष, घृणा एवं हिंसा का उत्तेजक नहीं माना जायेगा। यह एक ईसाई पर्व है, अतः आनन्द का दिन माना जायेगा। ग्यारहवें पोप ने निरीश्वरवादी कम्युनिज्म के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ने की घोषणा करते हुए बताया कि 'हम श्रमिकों के रक्षक सन्त जोसेफ के आदर्श को सम्मुख रख संसारव्यापी कम्युनिज्म के विरुद्ध चर्च का विस्तृत अभियान प्रारम्भ करते हैं।'

इस प्रकार संसारव्यापी कम्युनिज्म के विरुद्ध चर्च अभियान में सन्त जोसेफ को एक अस्त्र बनाया गया और प्रथम मई के दिन को सन्त जोसेफ का पर्व घोषित किया गया।

मई दिवस—जिससे कम्युनिस्ट प्रेरणा लेते हैं

सन् १८८४ से अमेरिका के लगभग सभी औद्योगिक केन्द्रों में काम के ८ घन्टे नियत किये जाने के लिये आन्दोलन प्रारम्भ हो गये थे। ७ अक्टूबर १८८४ को 'अमेरिकी फेडरेशन आफ लेबर' ने एक प्रस्ताव पारित करके यह घोषित किया कि 'पहली मई, १८८६ से काम का दिन कानूनी तौर पर ८ घन्टे का होगा।' १८८५ के अधिवेशन में पुनः उक्त प्रस्ताव को दुहराया गया। आखिर १ मई १८८६ भी आ गई। अब फेडरेशन के लिये यह आवश्यक हो गया कि वह अपने प्रस्ताव की सफलता के लिये कार्यक्रम निर्धारित करे। हड़ताल करने का निश्चय किया गया। अमेरिका के लाखों मजदूरों ने काम करने से अपने हाथ रोक दिये।

३ मई को शिकागो के मेक कार्मिक रीपर कारखाने के हड़ताली मजदूरों पर पुलिस ने अत्याचार किया और जिसमें ६ मजदूरों की जानें चली गईं। फिर क्या था, इस अत्याचार के विरोध में ४ मई को हे मार्केट स्क्वायर में मजदूरों का विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया। उस प्रदर्शन में किसी के बम से एक पुलिस अफसर की मृत्यु हो जाने के कारण मजदूर और पुलिस में जोरों से भिड़न्त हो गयी, जिसमें कई मजदूर मारे गये और बहुत से सिपाही घायल हुये। बाद में ४ मजदूरों को फांसी हुयी और बहुतों को लम्बा कारावास भी मिला।

इस घटना ने ही पहली मई के दिन को परम्परा का रूप दे दिया। १४ जुलाई १८८९ को पेरिस में कई देशों के मजदूर नेता एकत्र हुये।

और उस सम्मेलन ने ही पहली मई का दिन मजदूरों का दिन घोषित किया। लेनिन ने सन् १९२० में पहली मई को सारे रूस के लिये श्रम दिवस घोषित किया, फलस्वरूप सरकार की संरक्षता में वहां यह दिवस मनाया जाता है। लेनिन का कहना है कि "मई दिवस रूसी जनता की राजनैतिक आजादी के लिये संघर्ष को और समाजवाद को आगे बढ़ाने वाला दिन था।"

अपने देश में भी इस दिन कुछ श्रमिक संगठन रूसी और रूस के उदाहरण द्वारा श्रमिक जागृति की बात करते हैं और एक ही पक्ष की घोषणा दिवस जैसा मनाते हैं। परन्तु बाहर के देशों में यह दिवस इसी दिन और इसी रूप में इससे विपरीत लक्ष्य लेकर रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा मनाया जाता है। दोनों गुटों में प्रारम्भ से ही होड़ चल रही है कि अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक क्षेत्र में एक दूसरे को दबाकर कैसे प्रभावशाली बनाया जाय। दोनों के द्वारा दिये जाने वाले मई दिवस के स्पष्टीकरण भी भिन्न भिन्न हैं यहाँ तक कि परस्पर विरोधी हैं। यूरोप में मई-दिवस पर श्रमिक कार्यकर्ता विश्व में रूस का प्रभाव समाप्त करने की प्रतिज्ञा दुहराते हैं। दूसरी ओर रूस और उसके पिछलग्गू राष्ट्रों और उसके समर्थक दलों द्वारा इसी मई दिवस पर हर देश में पूंजीवादी देशों के नाम पर अमेरिका - ब्रिटिश ग्रुप को समाप्त करने के वादे किये जाते हैं। अतः यह मई दिवस श्रमिक एकता का दिन कदापि नहीं, वरन् श्रमिक फूट का दिन है। इसकी अन्तर्राष्ट्रीयता केवल नारेबाजी है और विश्व के शक्ति गुटों का माया-जाल भर है।

मई दिवस—देशभक्ति के लिये चुनौती

संसार के विभिन्न देशों को गुलाम बनाने के लिये वहां के भोले-भाले अशिक्षित मजदूरों को बहकाकर उन्हें राष्ट्रद्रोही एवं पंचमांगी

बनाने के लिये दुनिया के मजदूरो—एक हो' 'मई दिवस—जिन्दाबाद के लुभावने नारे लगाये जाते हैं।

भारत जैसे तटस्थ देश में भी एक ही फैक्टरी के मज़दूर संसार के विभिन्न श्रमिक संगठनों से सम्बन्धित दो या अधिक परस्पर विरोधी ट्रेड यूनियनों के रूप में बट गये हैं। इन्टक और हिन्द मजदूर सभा का सम्बन्ध आई० सी० एफ० टी० यू० (अमेरिका और ब्रिटेन से प्रभावित) से है और ए० आई० टी० यू० सी० का सम्बन्ध डब्लू० एफ० टी० यू० (रूस से प्रभावित) से है। क्या हम अपने देश के मजदूरों को इन दोनों साम्राज्यवादी दैत्यों के हस्तक बनने के लिये छोड़ देंगे? जो एक पाकिस्तान एवं दूसरा चीन के माध्यम से हमें गुलाम बनाने के लिये सन्नद्ध खड़ा है। मई दिवस के अवसर पर इन अन्तर्राष्ट्रीय कैम्पों के साथ ही यहां की सम्बद्ध यूनियनों को भी एक दूसरे के विरोध में अपनी शक्ति केन्द्रित करने के साथ शक्ति परीक्षण करके शीत युद्ध को गम्भीर बनाने के लिये अवसर प्राप्त होते हैं। एक ही युद्ध-भूमि में परस्पर विरुद्ध सेनाओं की व्यूह रचना के सदृश एक ही दिन परस्पर विरोधी श्रमिक संगठनों के होने वाले जमाव को हम एकता या मेल की संज्ञा नहीं दे सकते। श्रमिक एकता एवं देश-भक्ति दोनों के लिये 'मई दिवस' एक चुनौती है, जिसका मुकाबला करने के लिये प्रत्येक नागरिक को सन्नद्ध होना आवश्यक है।

मई दिवस का अर्थ—वर्ग संघर्ष

वैसे भी मई दिवस को यदि पूंजीवादी वर्ग पर मजदूर वर्ग की विजय कहा जाय तो यह वर्ग-संघर्ष का प्रतीक माना जायेगा। पहले मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण, फिर शोषितों की क्रान्ति यही इस दिन का संदेश है। ऐसे वर्ग-संघर्ष की मान्यता केवल पश्चिमी राष्ट्रों में ही

जाती है। भारत में ऐसे वर्ग की मान्यता नहीं है। यहाँ का सामाजिक ढांचा ही भिन्न है। यहां के बढ़ई, लुहार, सुनार, नाई आदि सभी समाज के अंग हैं। श्रमजीवी होकर भी किसी के दास नहीं हैं। उनका कोई मालिक नहीं है। समाज में किसी उद्योगपति के बराबर का हक हर चीज में उनका भी है। यहां न शोषक की स्थिति रह सकी है और न किसी के शोषित करने की प्रथा है। संसार की समस्त सम्पत्ति ईश्वर की है। यहां केवल एक वर्ग है, वह है भारत माता के पुत्रों का वर्ग। फिर हम वर्ग-संघर्ष और उसमें उत्पन्न सामाजिक विद्वेष के दिन को श्रम दिवस के रूप में क्यों मनायें? मई दिवस पश्चिमी राष्ट्रों की देन है। उससे पाश्चात्य बुराइयां तथा हमारी दासतापूर्ण मनोवृत्ति परिलक्षित होती है। भारतीय समाज व्यवस्था का एक ही सार्वजनिक आदर्श रहा है अर्थात् सम्पूर्ण समाज का पूर्ण हित। वर्गों का अस्तित्व हमें अमान्य है। हमें यह तथ्य विदित ही है कि आमदनी में विविध स्तर हो गये हैं और हम इस सम्बन्ध के पाप तुल्य विभेद को समाप्त करने का निश्चय कर चुके हैं। किन्तु, यह सोचना गलत है कि 'Haves' और "Have Nots" रूपी वर्गों में समूचा राष्ट्र बटा हुआ है। "Have" कौन है? क्या वह नियोजक (Employer) और नियुक्त (Employee) के मध्य का संघर्ष है? नियोजक कौन है? अपने मिल, कारखानों अथवा औद्योगिक संस्थान की दृष्टि से मैं एक नियुक्त (Employee) हूं, किन्तु अपने पारिवारिक नौकर की दृष्टि से मैं एक नियोजक (Employer) हूं। इस प्रकार कितनी ही श्रेणियों के रूप में दैनिक जीवन के २४ घण्टों में हमारी स्थिति बदलती रहती है। प्रोपराइटर के सम्मुख जनरल मैनेजर, उसके सम्मुख मैनेजर उसी प्रकार मैनेजर की उपस्थित में सुपरवाइजर, उसके बाद मिस्त्री, उसके पश्चात् उसके आधीनस्थ वेल्डर्स तथा अन्त में मजदूर की स्थिति सब एक दूसरे के सम्मुख नियुक्त (Employee) के रूप में समझे जाते हैं। वही मजदूर जब अपने घर जाता है तो अपने बर्तन धोने वाले नौकर

की दृष्टि में नियोजक (Employer) समझा जाता है। क्या इस प्रकार का समझा जाना हास्यास्पद नहीं होगा ? क्या उक्त श्रेणियां केवल दो वर्गों का ही बोध करती हैं ? अतः दो वर्गों की धारणा सर्वथा काल्पनिक एवं मिथ्या है। सम्पूर्ण राष्ट्र एक इकाई है। राष्ट्र के सभी व्यक्ति राष्ट्र रूपी एक ही अंगों के विविध अंग हैं। अतः उनके हितों में परस्पर संघर्ष नहीं हो सकता। स्वभावतः अनिवार्यरूपेण वे एक दूसरे के पूरक हैं। इस तथ्य को न समझने वाला व्यक्ति अपने में राष्ट्र-प्रेम की कमी को सूचित करता है। हमारा मत है---देश भक्त मजदूर अपने अधिकारों के साथ अपने उत्तर दायित्व को भी जानता है। देशभक्त नियोजक का ध्येय होता है 'स्वार्थ से पहले कर्तव्य' तथा उसका उद्देश्य राष्ट्रीय समृद्धि होता है। औद्योगिक सम्बन्धों के नियम में देशभक्त सरकार सदा न्याय-परायण और शुद्ध रहती है। राष्ट्रीयता तथा कृत्रिम रूप से विकसित वर्ग चेतना का साथ नहीं हो सकता। इन्हीं कारणों में औद्योगिक शान्ति स्थापित करने एवं श्रमिक क्षेत्र से हिंसा, घृणा तथा विद्वेष के भावों की समाप्ति के लिये "मई दिवस" की मान्यता को सदा सर्वदा के लिए हटाने का शुभ संकल्प भारतीय मजदूर संघ ने किया है। हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को भी यह विदेशी फूट पूरक दिन स्वीकार नहीं हो सकता। इसीलिये इस श्रमिक संगठन ने यह आवाज लगाई है कि भारत का "राष्ट्रीय श्रम दिवस" मई दिवस नहीं वरन् आदिकाल से चला आया हुआ "विश्वकर्मा जयन्ती" दिवस होगा।

★

विश्वकर्मा जयन्ती

सहस्त्रों वर्षों से भारत में हम विश्वकर्मा जयन्ती को मनाते चले आ रहे हैं इस आधुनिक काल में भी श्रमिक इस दिन छुट्टी मनाते हैं इस उत्पादन के देव की अर्चना करते हैं और इस दिन को एक पर्व मानते हैं। भारत में ऐसा कोई प्रदेश नहीं है, जहाँ के मजदूर इस दिन को छुट्टी का दिन न मानते हों। देश के लुहार, सुनार, बढ़ई तथा सभी दस्तकार, कारीगर विश्वकर्मा दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। राष्ट्रीय कलेण्डर में प्रादेशिक भेद के अनुसार विभिन्न स्थानों पर भिन्न - भिन्न तिथियों में इस पर्व को मनाया जाता है। वस्तुतः यह एक राष्ट्रीय पर्व है। जमशेदपुर टाटा के कारखानों में विश्वकर्मा जयन्ती के अवसर पर श्रमिकों को एक दिन की सवैतनिक छुट्टी दी जाती है। कई स्थानों पर विश्वकर्मा सोसाइटियां भी स्थापित हैं। अनेक स्थानों पर विश्वकर्मा की प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं। किसी-किसी प्रतिमा के एक मुख और किन्हीं में पांच मुख दिखाई देते हैं। उनके हाथों में उत्पादन सम्बन्धी विविध हथियार और औजार का दिग्दर्शन है तथा उनका वाहन हंस है।

विश्वकर्मा दिवस के सम्बन्ध में दो मत हैं। देश के कुछ भागों में यह दिवस माघ शुक्ल त्रयोदशी को पड़ता है तथा शेष भागों में विशेषकर पूर्वी हिस्सों में यह दिवस कन्या संक्रान्ति के अवसर पर जो प्रतिवर्ष

१७ सितम्बर को पड़ता है, मनाया जाता है। भारतीय मजदूर संघ ने किसी अन्तिम निर्णय के अभाव में प्रचलित तिथि के अनुसार मनाने का निश्चय किया है। साथ ही जब भी कोई समिति, संस्था अथवा समुदाय अपने प्रचलित तिथि के अनुसार इस दिवस को मनाता है—भारतीय मजदूर संघ उसका भी सहयोग करेगा। आज हमारे यहां के छोटे-छोटे कलाकार और कारीगर अपने वर्कशाप और घरों में इस दिवस को मनाया करते हैं। इस व्यक्तिगत धार्मिक प्रथा को राष्ट्रीय आधार पर आयोजित करना हमारा कर्तव्य है।

★

प्राचीन साहित्य में श्री विश्वकर्मा

"विश्वकर्मा दिन" ही भारत का "राष्ट्रीय श्रम-दिन" है यह सिद्धांत भारतीय मजदूर संघ ने फिर एक बार सबके सामने आग्रह-पूर्वक रखा है। इस कारण इस विशेष दिन एवं श्री विश्वकर्मा के बारे में कई क्षेत्र से जिज्ञासा दिखाई देने लगी है। कुछ लोगों ने पूछा भी है कि क्या अपने प्राचीन साहित्य में श्री विश्वकर्मा के विषय में कहीं कुछ उल्लेख मिल सकते हैं ?

वज्र के निर्माता

इन्द्र-वृत्रासुर संग्राम के प्रसंग पर प्रत्यक्ष स्वयं के पुत्र का वध करने के हेतु राष्ट्रभक्त विश्वकर्मा ने ऋषि दधीच की हड्डियों का वज्र बनाकर दिया था—इस कथा से हम सभी अच्छी तरह परिचित हैं। परन्तु अन्य घटनाओं के सम्बन्ध में साधारणतया पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाती। इस कारण पुराने साहित्य में श्री विश्वकर्मा के बारे में कहां-कहां उल्लेख हुआ है, इसका संक्षिप्त वर्णन करना आवश्यक हो गया है।

जन्म

श्री विश्वकर्मा के जन्म के सम्बन्ध में निम्न ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। स्कन्ध पुराण प्रभास खण्ड ७ अध्याय २१; वायु पुराण उत्तरार्ध अ० २२ श्लोक १५; वायु पुराण उत्तरार्ध अ० ५; भविष्य पुराण

ब्राह्मपर्व स० ७९; ब्रह्माण्ड पुराण मध्यम भाग उपो० भा. ३; अ० ३; मत्स्य पुराण अ० ५; अग्नि पुराण अ० १८; शिवपुराण रुद्र संहिता २, लिंग पुराण अ० ६२ पूर्वार्ध; वराह पुराण अ० ५६; ब्रह्मवैवर्त पुराण अ० ८; हरिवंश म० पुराण अ० ३. टी० प० १; महाभारत आदि पर्व अ० ६२; तथा समरांगण सूत्रधार अ० २०।

वैदिक साहित्य में

निःस्वार्थ एवं अनासक्त भाव से मानवता की सेवा करने वाले नर-श्रेष्ठों को भारत में सर्वदा से ही सम्मान का स्थान प्राप्त हुआ है। भगवान विश्वकर्मा के बारे में भी यही बात लागू होती है। वैदिक काल में इनके लिये यज्ञ किया जाता रहा है। (ऋ—१०.८१'४) विश्वकर्मा सूक्त द्रष्टा भी हैं। ऋग्वेद के अनेक सूत्रों का साक्षात्कार आपने किया है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद मण्डल १०, अ० ६, सूक्त ८१, मन्त्र १ से ७ तक तथा मण्डल १०, अ० ६, सूक्त ८२ में मन्त्र १ से ७ तक के द्रष्टा आप ही माने जाते हैं। इन सूक्तों को "ऋग्वेदीय विश्वकर्मा सूक्तम्" कहा गया है। यही सूक्त यजुर्वेद, अध्याय १७, यन्त्र १७ से ३२ तक उद्धृत हैं। इसमें २४वां एवं ३२वां ये दो मंत्र अधिक हैं। विश्वकर्मा सूक्त में १४ ऋचाएँ हैं। यजुर्वेद की दो अधिक ऋचाओं का समावेश करने पर इनकी संख्या १६ हो जाती है। पद्मपुराणान्तर्गत 'भूखण्ड' में विश्वकर्मा सूक्त के विषय में कहा गया है कि—

सर्वदेवेषु यत्सूक्तं पठ्यते विश्वकर्मणः।
चतुर्दशावृतेनैनं य इमेत्यादिना यजेत्॥"

इन सूक्तों के भगवान विश्वकर्मा केवल द्रष्टा ही नहीं, उसके देवता भी हैं। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद के अध्याय १४ के मन्त्र १२ व अध्याय १८ के मन्त्र ५८, ६०, ६२, ६४ व ६५ में भी इनका उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेद प्रथम खण्ड, काण्ड २ के ३५ वें सूक्त, जिसके ऋषि अंगिरा माने जाते हैं; के देवता भी विश्वकर्मा ही हैं। इसी वेद के खण्ड ८, काण्ड ६ के १२२वें सूक्त के भी देवता विश्वकर्मा और ऋषि भृगु हैं।

सामवेद में भी आपका उल्लेख उपलब्ध है। प्रपाठक ७ तृतीय अर्ध मण्डल १, उत्तरार्चिक प्रकरण के १६वें अध्याय की ९वीं ऋचा ("विश्वकर्मन् हविषा वावृधातः" आदि, में देवता विश्वकर्मा एवं ऋषि विश्वकर्मा भौवन माने गये हैं।

इसके अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर विश्वकर्मा का उल्लेख मिलता हैं। यथा—ऋग्वेद १-२-३६-२ ऋग्वेद ८-१-१४-९ यजुर्वेद २-५-१; पूर्व मीमाँसा अ० ११ पाद ३ तथा ऋग्वेद के खण्ड ७ मं० १० सू० ७६. मं० २ व ३ एवं सूक्त ७९ मं० ७ आदि।

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद को छोड़कर विश्वकर्मा की दृष्टि से निम्नांकित मन्त्र भी महत्वपूर्ण हैं। यथा—यजुर्वेद अ० ३४ मन्त्र ५८ ("ब्रह्मणा स्पते···") यजुर्वेद अ० ११ मं० ८३ ("अन्न पते···") अथर्ववेद का १ सू० १४ मन्त्र २ ("विद्युत सूक्त ") व अथर्ववेद कां० ३ सूत्र १५ मंत्र १ ("पव्य कामोऽथर्वा ऋषिः ") आदि।

विश्वकर्मा द्वारा स्थापित शिल्प संगठनों को 'विश्वकर्मा-सुत' के नाम से लोग जानते हैं। "मनुर्मयस्त्वष्टा तक्षा शिल्पी च पञ्चमः" ये पाँच औद्योगिक कलाकारों के संगठन हैं। इन्हें लाक्षणिक ढंग से पुत्र कहा है क्योंकि विश्वकर्मा ने ही इन्हें जन्म दिया। निम्नलिखित ग्रन्थों में उसका उल्लेख प्राप्त होता है :—

रुद्रयामल वास्तु तन्त्र, हनुमत शिल्प अ० ३; स्कन्धपुराण नागरखण्ड

५-१३; शैवागम ४९-५०, शैवागम प्र० ५१ श्लोक १८-१९; विष्णु पुराण १।१५; ब्रह्म वैवर्त्त पु० १-१०।

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। प्रत्येक वेद का एक-एक उपवेद, अथर्ववेद अथवा स्थापत्यवेद कहा जाता है। इस उपवेद के कर्ता विश्वकर्मा ही माने गये हैं। इसमें शिल्पशास्त्र का विवेचन है

'स्थापत्य विश्वकर्म शास्त्रम' इस वाक्य का प्रयोग श्रीधर टीका में किया गया है। चरण व्यूह ग्रंथ में 'अर्थवेदो विश्वकर्मादि शिल्पशास्त्र-मथर्ववेदस्योपवेदः' का उल्लेख मिलता है। पद्मपुराण विश्वकर्ममहात्म्य भूखण्ड के २५वें अध्याय के १७वें श्लोक में विश्वकर्मा को विश्व में शिल्प विद्या का आदि प्रवर्त्तक कहकर सम्बोधित किया गया है और भागवत महापुराण स्कं० १० अ० ५० में स्पष्ट रूप में घोषित किया गया है कि जहां कहीं भी शिल्प नैपुण्य दिखाई देता हो, उसे विश्वकर्मा का ही प्रताप समझना चाहिये। यही कारण है कि 'शिल्प सागर' 'शिल्प रत्नाकर' 'विश्वकर्म शिल्प' आदि शास्त्रीय ग्रंथों के प्रारम्भ में विश्वकर्मा स्तुति दिखाई देती है। अथर्ववेद १२-३-३३ में देवों के शिल्पी के रूप में विश्वकर्मा को गौरवान्वित किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण शिल्पवेद के जनक होने के कारण एवं अर्थवेद के रचयिता होने के कारण भी औद्योगिक कला के क्षेत्र से सम्बन्धित लोगों का 'आथर्वण' अर्थात् अथर्ववेदीय कहकर सम्बोधित किया जाता है। "अथर्वणस्योपवेदः शिल्पवेदः प्रकीर्तितः। तस्माद् "आथर्वणाः प्रोक्ताः सर्वे शिल्पि न एव च॥' (शैवागमे) इस सिद्धांत के अनुसार सभी औद्योगिक श्रमिक आथर्वण हैं एवं लाक्षणिक अर्थ से 'विश्वकर्मासुत' हैं। समुद्र पर पुल बांधने वाले नल का परिचय कराते हुये भगवान राम ने उन्हें 'तनयो-विश्वकर्मणः' कह कर सम्बोधित किया था (बाल्मीकि रामायण युद्ध-काण्ड, सर्ग २२, श्लोक ४१)।

वास्तु-निर्माण कार्य

श्रीविश्वकर्माकृत वास्तु निर्माण कार्य की दृष्टि से संस्कृत साहित्य में निम्न उल्लेख प्राप्त होता है :—

स्कन्दपुराण खण्ड ७ अ० ३२० श्लोक ४० से ७० तक एवं अध्याय ३२१ में यह उल्लेख है कि भगवान शंकर की आज्ञानुसार ऋषियों के निवास के लिये आठ योजन व्यास की भूमि में विश्वकर्मा ने एक सुन्दर नगरी का निर्माण किया। उसी प्रकार स्कन्दपुराण वै० ख० पु० मा० द्वितीय अध्याय १६ श्लोक ६ से ३० एवं अध्याय १७ में कहा गया है कि 'महाराज इन्द्रद्युम्न के लिये विश्वकर्मा ने शीघ्रता से एक प्रशस्त यज्ञशाला निर्मित की।"

हरिवंश महापुराण टीका प. २ अ. ५८ श्लोक २० से ४४ तक में अमरावती नगर के निर्माण का उल्लेख है। इसी के ९८ अ. में भागवत १०।५० में द्वारका नगर निर्माण का प्रसंग है। शिवपुराण रुद्र संहिता २ अध्याय २० में अलकापुरी के निर्माण का प्रसंग है। ब्रह्मांडपुराण उत्तर भाग उप० भा० ४ अ० ३१ श्लोक ८ से ९० तक में खम्भों पर खड़ी की गई श्रीपुर नगरी का वृत्तान्त है। स्कन्दपुराण खण्ड ४ उत्तरार्ध अ० ६६ श्लोक ७९ से १०० तक में शंकर भगवान के लिये निर्मित संगमरमर के प्रासाद का वर्णन है। ब्रह्मांड पुराण मध्यम भाग उपो० पा० ३ अ० ३४ श्लोक १ से ६१ तक में शंकर व ब्रह्मदेव के नगरी की रचना का वर्णन है। शिवपुराण रुद्र सहिता पार्वती खण्ड ३, अध्याय ४१ श्लोक १ से ४० और अध्याय ४२ श्लोक १ से ५० में पार्वती के विवाह मण्डप की अद्भुत रचना एवं उसकी चित्रकला से मुग्ध नारद का रसदार वर्णन है। शिल्प रत्नाकर रत्न ८ में स्वयं विश्वकर्मा के मुख से जिनेन्द्र के प्रासाद की रचना का वर्णन मिलता है। महाभारत आदिपर्व २२७-५९ में धृतराष्ट्र के लिये निर्मित इन्द्रप्रस्थ की, ब्रह्मवैवर्त्त पु० ४-१७ में श्रीकृष्ण भगवान के लिये निर्मित वृन्दावन की व

वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड ५ में इन्द्र के लिये लंका की निर्मिति विश्वकर्मा ने की, इस बात का उल्लेख मिलता है।

विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सुविख्यात वज्र का उल्लेख ऋग्वेद के अतिरिक्त भागवत ६-५ में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण १-६ एवं ३-१ में वृत्तासुर की उत्पत्ति की कथा है। भागवत ६-९ एवं महाभारत उद्योग-पर्व ९-५५ में वृत्तोत्पत्ति और इन्द्र-वृत्त संघर्ष का वर्णन है। पद्मपुराण सृष्टि खण्ड १९ व भागवत ६-१० एवं ६-९-५४ में दधीचि की अस्थि का वज्र बनाकर इन्द्र को अर्पण करने का उल्लेख है।

हरिवंश महापुराण टी० प० ३ अध्याय २९ श्लोक ५ से १२ तक व स्कन्द पुराण प्रभासखण्ड ७ अध्याय ११ श्लोक १०, १९९ व २०० में विश्वकर्मा द्वारा देवों के लिये निर्माण किये गये भिन्न-भिन्न शस्त्रों का उल्लेख है। पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड ८ में ऐसा वर्णन मिलता है कि अतिरिक्त सूर्यतेज के अनेक आयुध विश्वकर्मा ने निर्माण किये और विष्णु को सुदर्शन और शंकर को त्रिशूल एवं इन्द्र को वज्र आदि शस्त्र प्रदान किये।

समर रथ निर्मिति

त्रिपुरासुर का नाश करने के लिये विश्वकर्मा ने शंकर के लिये एक दिव्य रथ तय्यार कर दिया। इसका वर्णन निम्नलिखित स्थानों पर मिलता है :—शिवपुराण रुद्र संहिता युद्धखण्ड अध्याय ८ श्लोक ४ से ३० एवं अध्याय ६ व ७, लिंगपुराण अध्याय ७१ एवं महाभारत आदि पर्व २३१—१२ व कर्ण-पर्व २६ में।

दूरबीन का निर्माण

शिल्प-संहिता के १८वें अध्याय में ऐसा उल्लेख मिलता है कि मनु

के आग्रह पर विश्वकर्मा ने दूरबीन तय्यार की (मनोर्वाक्यं समाधाय देव शिल्पीन्द्र शाश्वतः । यंत्रम् चकार सहसाम् दृष्ट्यर्थं दूरदर्शनम् ॥) ।

विमान निर्मिति

"विश्वम्भर वास्तु शास्त्र" के अनुसार नानाविधि उद्यान, यंत्र, विमान, दुर्ग, कुएं सड़कें, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, चित्रकला, स्वर्णादि धातुओं की प्रक्रिया—यह सब विश्वकर्मा के ही कर्तृत्व का फल है। पद्म-पुराण के भूखण्ड में ऐसा स्पष्ट उल्लेख है कि गृह, यन्त्र, वाहन, अलंकार, प्रतिमा, मूर्ति, चित्र, वस्त्र आदि समस्त शिल्प विश्वकर्मा जनित हैं। महाभारत के शान्तिपर्व (५८-६५) में 'यन्त्राणि विविधान्येव क्रियास्तेषाम्" एवं वात्स्यायन के कामसूत्र में (१—३) "विश्वकर्म विश्वकर्म प्रोक्त यंत्र मात्रिका" पर भाष्य करते हुये 'जयमंगलटीका' में कहा गया है कि "सजीवानां निर्जीवानाम् यन्त्राणाम् यानोदकसंग्रामार्थं घटनाशास्त्रं विश्वकर्म प्रोक्तम् ।" अर्थात् स्वयं चालित एवं अन्यों द्वारा संचालित तथा आकाश एवं समुद्र में युद्ध के काम में आने वाले यन्त्रों के रचनाशास्त्र के उद्गाता विश्वकर्मा ही हैं। विमान भी इसी श्रेणी का एक यन्त्र है। भारद्वाज विरचित 'यंत्र सर्वस्व' में विमान की व्याख्या करते हुये कहा गया 'पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु खगवद् वेगतः स्वयम् । यः समर्थो भवेदन्तुं स विमान इति स्मृतः ॥" — भारद्वाज सूत्र अध्याय १ सूत्र २ ।

विमान की कल्पना करने एवं निर्माण करने वाले प्रथम व्यक्ति विश्वकर्मा ही थे। कल्कि पुराण तृतीयांश अध्याय ४ में विश्वकर्मा द्वारा निर्मित दो युद्ध विमानों का वर्णन है। सुप्रसिद्ध पुष्पक विमान को भी विश्वकर्मा ने बनाया था। वाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड स० ९ में कहा गया है कि विश्वकर्मा ने ब्रह्मदेव के लिये अत्यन्त सुन्दर दीप्तिमान एवं सर्वरत्नाभूषित पुष्पक नामक विमान का निर्माण किया।

श्रीमद्भागवत के रचयिता ने विमान की विशिष्टता का वर्णन करते हुये कहा कि यह कभी जमीन, कभी आसमान में, कभी उत्तुंग शिखर पर और कभी पानी में चलता है ("क्वचिद् भूमो क्वचिद् व्योम्नि गिरिश्रृंगे जले क्वचित्") ।

शिल्प संहिता के अध्याय १८ में कहा गया है कि विश्वकर्मा ने भाप की ताकत से चलने वाले जिस विमान का निर्माण किया है उसकी गति सदैव एक रहती है । वायु के समान वह इच्छागमन कर सकता है और नानाविधि यंत्र सामग्री से भरपूर है ।

वाष्पयोगे तु वै यानं चकार विधिनंदनः ।
अविच्छेदगतिर्यस्य वायुवत् कामगामिनम् ॥
ज्ञानोपकरणैर्युक्तं भास्वत पुष्पक विदुः ।
(शि० सं० अ० १८)

विश्वकर्मा की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले उनके शिष्य एवं 'मयमतम्' नामक ग्रन्थ के रचयिता मय द्वारा निर्मित 'वैहायस' नामक पुष्प विमान का वर्णन भागवत स्कन्द ८ अध्याय १० श्लोक १६ से १८ तक में है । स्कन्द १० में मय निर्मित 'सोम' विमान का भी वर्णन है । विमान रचना का प्रथम विवरण ऋग्वेद २-३-२३-२ में इस प्रकार है "द्वादश प्रधयश्चक्रमेक त्रीणि नभ्यानि क उतश्चिकेत । तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्ठिर्न चलाचलासः ।"

महर्षि भारद्वाज ने अपने यंत्र सर्वस्व नामक ग्रन्थ में विमान विद्या के ३२ रहस्य बताये हैं उसमें से कृतकर नामक तीसरा रहस्य बताते हुये वे कहते हैं कि "विश्वकर्मा छाया पुरुष मनुमयादिशास्त्रानुष्ठान द्वारा तत्तच्छास्त्रयनुसंधानपूर्वकं तात्कालिक संकल्पानुसारेण विमानरचना-क्रमरहस्यम् ।"

इसका अर्थ यह है विश्वकर्मा एवं उनके परम्परा अनुयायी (मनु, मय आदि, की रचनाओं का यथावत मनन करके उनके शक्ति और अनुसंधान के अनुसार विमान रचना का रहस्य जान लेना चाहिये ।

अन्य कार्य

विश्वकर्मा ने अन्य बहुत बड़े-बड़े कार्य किये । ऋग्वेद १०-८२-३ के अनुसार विश्वकर्मा ने सभी देवों का नामकरण किया । महाभारत आदिपर्व २३१ में तिलोत्तमा नामक अप्सरा का निर्माण उन्हीं के द्वारा करने का प्रसंग है । पद्मपुराण सृष्टि खण्ड १६ में ब्रह्मा के यज्ञ में उनके द्वारा मुण्डन संपन्न होने का उल्लेख मिलता है । मत्स्य पुराण २५२ के अनुसार इन्होंने ही वास्तुशास्त्र पर प्रमाणिक ग्रंथ लिखा । बृहदारण्य उपनिषद ६-४-२१ व ऋग्वेद १०-१८४-१ के अनुसार गर्भ वृद्धि के लिये इनकी उपासना करनी चाहिये ।

राज्याभिषेक और भूदान

एतरेय ब्राह्मण ८-२१ में ऐसा वर्णन मिलता है कि कश्यप ऋषि न विश्वकर्मा ऐन्द्र महाभिषेक किया । उसके कारण वह पृथ्वी का सम्राट हुआ । महाभिषेक पौरहत्य करने वाले को सम्पूर्ण साम्राज्य दान करने का संकल्प विश्वकर्मा ने पहले ही किया था, तदनुसार कश्यप ऋषि को सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया । परन्तु पृथ्वी ने कश्यप ऋषि की ओर जाने से इन्कार कर दिया । शतपथ ब्राह्मण १३-७-१-१५ में कहा गया है कि विश्वजित यज्ञ करने के बाद भी सर्वस्व दान करने का उनका प्रयत्न सफल नहीं हो सका । विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण प्राणियों का, अन्त में अपना भी होम कर डाला—ऐसा वर्णन ऋग्वेद १०-८१-१ में; ऐतरेय ब्राह्मण ८-१० में एवं निरूक्त १०-२६ में मिलता है ।

अन्य व्यक्तिगत परिचय

विश्वकर्मा के सम्बन्ध में व्यक्तिगत जानकारी यत्र-तत्र अनेक प्राचीन ग्रन्थों में बिखरी पड़ी है। उदाहरणार्थ ब्रह्म पुराण ३,१८६ व ८७ भागवत ६-६, महाभारत उद्योग पर्व ९-३, भागवत ६-६-३९ व स्कन्दपुराण प्र० खं० अ० १७ श्लोक १६ में उनके माता-पिता का परिचय दिया गया है। वायु पुराण उ० अध्याय २२ श्लोक १७ से २० में उनके कार्य की प्रशस्ति और उसी अध्याय में आगे उनकी कन्या एवं पत्नी का निर्देश है तथा वशिष्ट पुराण काण्ड ३, अध्याय ६ में उनके पंचमुख का उल्लेख है। ऐसे उल्लेख और भी अनेक हैं।

आदर्श गुरुभक्ति

विश्वकर्मा के अन्दर इतना प्रचण्ड कर्तृत्व कैसे निर्माण हुआ, इसकी जिज्ञासा स्वाभाविक है। इसका रहस्य गुरुभक्ति एवं अ तपस्या में है। स्कन्द पुराण काशी खण्ड उ० ४ अ. ८६ में विश्वकर्मा की असीम गुरुभक्ति, गुरु द्वारा उनकी कठोर परीक्षा और उस परीक्षा में उत्तीर्ण होते समय ही शिव जी की कृपा से उनके द्वारा सम्पादित औद्योगिक कला का विकास आदि का रोचक वर्णन है। मराठी के पाठकों को यही कथा "श्री गुरुचरित्र" नामक ग्रन्थ में ४१ व ४२ अध्याय में पढ़ने को मिलती है।

विश्वकर्मा व्यक्ति व पद

विश्वकर्मा के सम्बन्ध में प्राचीन ग्रन्थों में जहां वर्णन मिलता है, ऊपर उल्लेख किया गया है। परन्तु यहां यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि वास्तुशास्त्र पर मयशतम् नामक ग्रन्थ लिखने वाले मय ने अपने ग्रन्थ के पाँचवें अध्याय के १५,१६ एवं २३ श्लोक में इस

बात का विवेचन किया है कि कालान्तर में 'विश्वकर्मा" यह व्यक्ति विशेष का नाम न रहकर उन्हीं के समान कोई उत्तम कारीगरी करने वाले व्यक्ति की पदवी के रूप में व्यवहृत होने लगा था।

अनुपलब्ध साहित्य

विश्वकर्मा के विषय में कुछ साहित्य आज उपलब्ध है। "विश्वकर्मा पुराण" नामक उपपुराण का उल्लेख तो अनेक स्थान पर मिलता है परन्तु यह ग्रन्थ आज कहीं भी उपलब्ध नहीं। उसी प्रकार भविष्य पुराणान्तर्गत एक त्वाष्ट्र पर्व का उल्लेख मिलता है परन्तु वह भी अनुपलब्ध है।

अधिक अध्ययन आवश्यक

उपर्युक्त विवरण से प्राचीन साहित्य में विश्वकर्मा के महत्वपूर्ण स्थान का आभास मिलता है। आधुनिक भारत के औद्योगीकरण के काल में सभी औद्योगिक श्रमिकों के अधिदेवता श्री विश्वकर्मा के विषय में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करना एक राष्ट्रीय आवश्यकता है। उस दृष्टि से अध्ययन व मनन करने की प्रेरणा जितनी बढ़ेगी, उतना ही श्रेयस्कर है।

★

विश्वकर्मा

विश्वकर्मा, जिन्हें त्वष्टा भी कहा जाता है, स्वायम्भुव मन्वन्तर में देवताओं तथा प्रजापति के शिल्पी थे। अपने हाथ और बुद्धि-कौशल द्वारा विविध पदार्थों की सृष्टि करना उनका अधिकार और कर्तव्य था। वे शिल्प-विज्ञान के आचार्य थे। सुन्द और उपसुन्द के विनाशार्थ उन्होंने ही तिलोत्तमा को उत्पन्न किया था। त्रिपुरासुर के विनाशार्थ उन्होंने भगवान शिव के रथ का निर्माण किया। देवों के लिये वायुयान का निर्माण करना उन्हीं का कार्य था। उन्होंने इन्द्र के लिये लंका का श्रीकृष्ण के लिये द्वारिका, वृन्दावन का तथा धर्मराज युधिष्ठिर के लिये हस्तिनापुर का निर्माण किया। उन्होंने ही इन्जीनियरिंग की सर्वप्रथम अधिकारिक पुस्तक लिखी। देवताओं के शास्त्रागार का निर्माण किया। दधीचि ऋषि की हड्डियों से उन्होंने ही घातक वज्र बनाया। उनकी कन्या संज्ञा, विवस्वान की पत्नी थी। उनका तेज उसके लिये असह्य होने के कारण विश्वकर्मा ने कुम्हार के चक्र का प्रयोग कर उनके तेज को कम किया और उस तेज से भगवान विष्णु, शिव और इन्द्र के लिये क्रमशः चक्र, त्रिशूल और वज्र का निर्माण किया। ये ही यज्ञीय वेदिका के निर्माता थे। संसार के वही सर्व प्रथम नापित थे, जिन्होंने एक यज्ञ में ब्रह्मा का बाल बनाया। विश्वकर्मा ही समस्त कला, कौशल और उद्योगों के मूल प्रवर्त्तक थे। लोहार, सुनार, कुम्हार, दर्जी, शिल्पी, कृषक एवं नापित इत्यादि सभी परिश्रमी एवं उद्योगशील समुदाय के वे

मूल पुरुष हैं। समस्त उद्योगों के प्रवर्त्तक होने के कारण ऋग्वेद ने लाक्षणिक रूप से उन्हें समस्त पृथ्वी और स्वर्ग का निर्माता कहा है। यदि हम भारत में हुये औद्योगिक विकास में विश्वकर्मा के अलौकिक कार्य को ठीक ढंग से समझें और भारत को संसार का आदि सभ्य देश मानें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि विश्वकर्मा संसार के समस्त श्रम तथा औद्योगिक विकास और उत्पादन के आदि प्रवर्त्तक हैं।

विश्वकर्मा का विवाह प्रह्लाद की पुत्री रचना से हुआ था। उसे प्रह्लादी, विरोचना, वैरोचनी, यशोधरा आदि भी कहते थे। उनका पुत्र त्रिशिरा विश्वरूप बहुत बड़ा विद्वान था। वह इतना विद्वान था कि एक अपमान के कारण जब बृहस्पति इन्द्र को त्याग कर चले गये तो शत्रुकन्या का पुत्र होते हुये भी त्रिपुरा को देवताओं ने अपना गुरु बनाया। किन्तु उसकी बढ़ रही जनप्रियता एवं उसके उभयपक्षीय अनुराग से उत्पन्न संदेह के कारण इन्द्र ने उसका वध कर दिया। अपने पुत्र-वध से रुष्ट होकर विश्वकर्मा ने इन्द्र से बदला लेने के लिये दूसरे पुत्र की प्राप्ति हेतु एक कठोर अनुष्ठान प्रारम्भ किया। उनके अनुष्ठान के फलस्वरूप वृत्त का जन्म हुआ। वह एक श्रेष्ठ योद्धा था और उससे देवता भी डरते थे। कुछ समय तक उसने देवों के शत्रु हिरण्याक्ष के सेनापतित्व का कार्य किया। उसके बढ़ रहे आतंक के कारण देवता लोग उसके संहार की कामना करने लगे। उससे लड़ने का साहस इन्द्र तक को भी नहीं था। उसके वध के लिये किसी महर्षि की हड्डियों से निर्मित वज्र की आवश्यकता थी। राष्ट्र के सम्मुख ऐसी आवश्यकता उपस्थित होने पर महर्षि दधीचि आगे आये और उन्होंने अपनी अस्थियां समर्पित कर दीं। उन हड्डियों से दृढ़ वज्र का निर्माण करने की समस्या उपस्थित हुई, क्योंकि वज्र में रंचमात्र भी दोष रह जाता तो इसका अर्थ होता समर में इन्द्र की पराजय। इससे इन्द्र का ही नाश नहीं होता अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र बर्बाद हो जाता। इस कार्य के उपयुक्त और

कौन व्यक्ति हो सकता था ? किन्तु वे वृत्रासुर के पिता थे। क्या राष्ट्र-हितार्थ वे अपने ही पुत्र के नाश में शुद्ध भाव से सहयोग करते ? किन्तु राष्ट्रप्रेम ने सन्तान प्रेम पर विजय पायी। राष्ट्रहित का ध्यान आते ही देवताओं के अनुरोध पर इन्द्र से बदला लेने में समर्थ इस दूसरे पुत्र की भी बलि चढ़ाने में वे नहीं हिचके। उन्होंने दधीचि की हड्डियों से वज्र बनाकर इन्द्र को समर्पित कर दिया, फलस्वरूप वृत्त का वध हुआ। विश्वकर्मा का यह अनुपम बलिदान न केवल श्रमिक वर्ग को वरन् सम्पूर्ण भारत सन्तति को सदैव अनुप्राणित करता रहेगा।

★

आह्वान

आज अनेक विश्वकर्मा देश के औद्योगीकरण में, कल-कारखानों में, टिस्को व राउरकेला में, भिलाई व सिन्दरी में, दुर्गापुर व चितरंजन में लगे हुये हैं और हजारों इंजीनियरिंग तथा टेकनिकल इन्स्टीच्यूटों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में इस दूसरे ब्रह्मा, जिस पर सृष्टि के भौतिक प्रगति का सारा दायित्व सौंपा गया था, उस महापुरुष की स्मृति में हमारा यह राष्ट्रीय कर्त्तव्य हो जाता है कि उनके जन्म-दिवस को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में प्रचलित करें। समय आ गया है---मजदूर क्षेत्र में भी राष्ट्रीय अस्मिताओं को हम जगायें। श्रमिकों को दर-दर की ठोकरें खाने, किसी के सामने हाथ पसारने तथा किन्हीं भी नारों के पीछे भागने की दुःस्थिति को हम बदलने का संकल्प करें। हम सभी कार्यक्षेत्रों के सदृश श्रमिक क्षेत्र में अपनी राष्ट्रीय परम्पराओं का आदर करें। यह अत्यन्त आश्चर्य एवं लज्जा की बात है कि जब लाखों भारतीय श्रमिक आज भी श्रद्धापूर्वक इस दिवस को मनाते हैं तो भी आंग्ल शिक्षा-दीक्षा प्राप्त आधुनिक ट्रेड यूनियनों के नेता इसके महत्व को समझने से इनकार कर रहे हैं। हम उनसे पूछना चाहते हैं कि क्या हम एक नवजात राष्ट्र हैं? क्या भारत में श्रमिक नहीं थे? क्या अपनी अनोखी स्थिति के अनुकूल परम्पराओं और संस्थाओं को विकसित करने के लिये हमारे पास बुद्धि का अभाव था? क्या भारतीय

प्रतिभा के लिये श्रम दिवस का विचार सर्वथा अकल्पनीय था ? क्या पश्चिम के मई दिवस को वसीयत देने के पूर्व हमने अपने राष्ट्रीय दिवस के महत्व एवं उसके लागू करने का विचार किया था ? अनेक औद्योगिक बुराइयों से ग्रस्त पाश्चात्य लोगों से भव्य अतीत रखने वाले इस राष्ट्र को श्रम दिवस का उधार माँगने की अनुमति नहीं दी जा सकती। अपने कतिपय नेताओं के आत्मविस्मरण के कारण हमें कई पाश्चात्य रीति-रिवाजों को मानना पड़ा है और यह मई दिवस भी उसमें से एक है। पश्चिम के अन्धानुकरण की वृत्ति उत्पन्न करने वाली हीनता की भावना हमें समाप्त करनी होगी। हमारा आग्रह है कि हम लोग ट्रेड यूनियनों के क्षेत्र में अपने राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में विश्वकर्मा दिवस को पुनः लागू करने का व्रत लें।

आज के पापतुल्य विभेद को मिटाने के लिये 'वर्ग संघर्ष', कोई पैनेसिया नहीं है। यह तो प्रतिक्रियावादी व संकीर्ण विचार वालों की देन हैं। भारत कल-कारखानों वाला देश न होकर कृषि प्रधान देश हैं। मालिक और मजदूर, मजदूर और शेष जनता, वामपंथी और दक्षिण पंथी, सेकुलर और साम्प्रदायिक, समाजवादी और गैर समाजवादी आदि अनेक नारे लगाकर देश को खण्ड-खण्ड में बांटने के मंसूबे रचे जा रहे हैं। हम उनके इस घृणित उद्देश्य को सफल नहीं होने देंगे। सभी चाहते हैं, "न्याय, समानता और सम्मानित जीवन"। ऐसी धारणा रखना किसी सोशलिस्ट अथवा कम्युनिस्ट की बपौती नहीं है। भारतीय संस्कृति की तो यह जन्मजात भावना है, उसमें किसी इज्म के सहयोग की आवश्यकता नहीं।

अनेक वर्गों और उपवर्गों में बांट कर देश को छिन्न भिन्न करने वाले गद्दार के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकते, भारत में जब भी नागरिकों को दो समूहों में देखा गया है तो एक जयचन्दों का रहा और

दूसरा पृथ्वीराज का, एक मानसिंहों का था तो दूसरा राणा प्रताप का। आदिकाल से आजतक जब भी यह दृष्टि धूमिल होकर दूसरी ओर पड़ी कि भारत गुलाम होता रहा। आज भी देशद्रोहियों का एक वर्ग है और देशभक्तों का दूसरा। भारत में वर्ग है तो इस प्रकार का तथा संघर्ष है तो ऐसे लोगों से। इस तथ्य को भुलाने के लिये ही देशद्रोहियों द्वारा अनेक वर्गों की दुहाई दी जाती है।

हमारे देश का यह दुर्भाग्य ही है कि वह प्राचीनकाल से चलते आये हुये अपने "राष्ट्रीय श्रम दिवस" विश्वकर्मा जयन्ती की ओर दुर्लक्ष कर रहा है। "मई दिवस" को हम "अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस" के नाते मनाने का सोच भी सकते हैं परन्तु "राष्ट्रीय श्रम दिवस" की ओर दुर्लक्ष करके और उसकी उपेक्षा करके यह सम्भव नहीं हो सकता।

भारतीय मजदूर संघ इस कार्य के लिये समस्त देश प्रेमियों को आह्वान करता है। विश्वकर्मा के नाम पर कार्य करने वाली समितियों को आगे बढ़ना चाहिये। हमें यह विश्वास है कि किसी भी भारतीय श्रमिक संगठनों से सम्बन्धित यूनियनें धीरे-धीरे निश्चित रूप से यह दिन स्वीकार कर लेंगी। इस दिशा में नेतृत्व करने वालों को भविष्य में एक महान राष्ट्रीय कार्य का सम्पादन करने वाले के रूप में स्मरण किया जायेगा।

★